इकाई 1

गृहविज्ञान

1.1 गृह विज्ञान की संरचना

1.2 गृह विज्ञान का उद्देश्य

1.3 गृह विज्ञान में रोजगार की सम्भावनाएँ

1.1 गृह विज्ञान की संरचना

गृहविज्ञान शिक्षा के स्वरूप में बीते दशकों में व्यापक परिवर्तन आये हैं। शुरुआती दिनों में इसे डोमेस्टिक साइंस के नाम से जाना जाता था जिसके अन्तर्गत घर को व्यवस्थित रखना, गृह सज्जा, खाना बनाना, बच्चों का पालन-पोषण, सिलाई आदि की शिक्षा दी जाती थी तथा इन क्षेत्रों में शिक्षार्थियों को कुशल गृहिणी एवं कामगार बनाने की कोशिश की जाती थी। समय के साथ-साथ गृह विज्ञान विषय की संरचना में व्यापक बदलाव आया। इसके अन्तर्गत गृह विज्ञान को पाँच शाखाओं में विभाजित किया गया।

1. परिवारिक संसाधन व्यवस्था **(Family Resource Management)**
2. मानव विकास **(Human Development)**
3. भोजन एवं पोषण **(Food and Nutrition)**
4. वस्त्र एवं परिधान **(Textile and Clothing)**
5. शिक्षा एवं प्रसार **(Education and Extension)**

उल्लेखनीय है कि डोमेस्टिक साइंस की सभी विषयों की पढ़ाई अभी भी होती है लेकिन ऊपर वर्णित शाखाओं के अन्तर्गत एवं विस्तृत रूप से।

1.1 गृह विज्ञान की संरचना (Structure of Home Science)

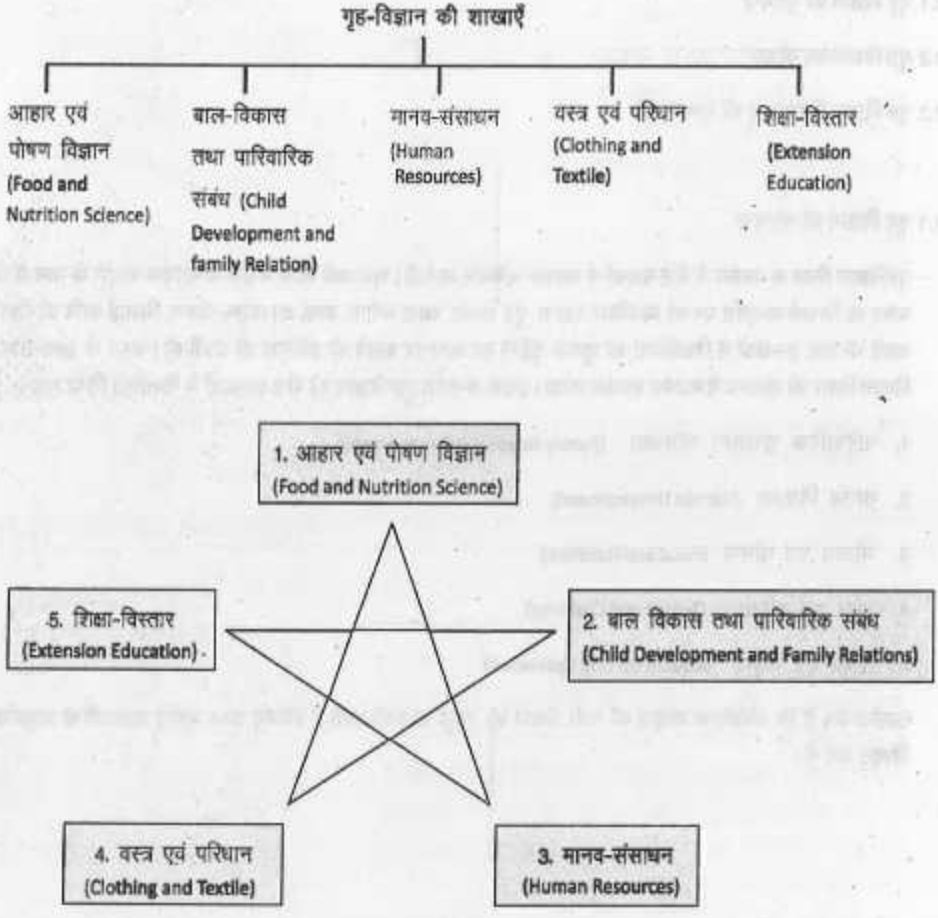

चित्र : 1 - गृह विज्ञान के विभिन्न शाखाओं का पारस्परिक संबंध

1 आहार एवं पोषण विज्ञान (Food and Nutrition Science) : इसमें आहार से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी दी जाती है, जैसे आहार से मिलने वाले पोषण, पोषण की कमी या अधिकता से होने वाली बीमारियाँ, पोषक तत्वों के कार्य, इसकी प्राप्ति के स्रोत, उनकी प्रस्तावित मात्राएँ, आहार-आयोजन, भोजन-संरक्षण, रोग की अवस्था मे दिए जाने वाले आहार आदि की विस्तृत जानकारी दी जाती है। जैसा कि हमलोग जानते हैं कि वायु एवं जल के बाद भोजन मनुष्य की आधारभूत आवश्यकता है परन्तु यह प्रश्न हमारे मस्तिष्क में बार-बार उठता है कि हम क्या खाएँ? कितना खाएँ? कहाँ खाएँ? कैसे खाएँ? जो हमारे स्वास्थ के लिए उपयुक्त है। गृह विज्ञान के इस संरचना के तहत हम इन तमाम बातों का अध्ययन करते हैं।

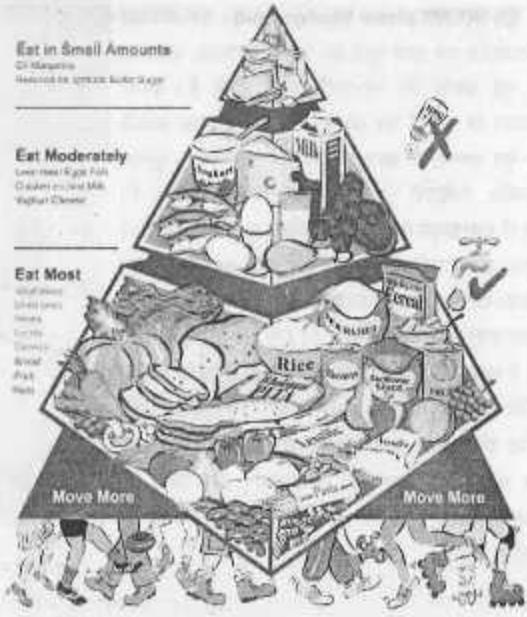

चित्र : 2 - क्या खाएँ और कितना खाएँ (आहार एवं पोषण)

2 बाल-विकास तथा पारिवारिक संबंध : बच्चे ही देश के भावी कर्णधार होते हैं और बालविकास ही भावी जीवन की नींव है। बाल-विकास का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक है। इसके अन्तर्गत बच्चों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास, विशिष्ट बालकों की समस्याएँ, आवश्यकताएँ, पारिवारिक संस्थान एवं स्वरूप तथा संबंधों इत्यादि के बारे मे विस्तृत जानकारी दी जाती है इसमें गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था के विकास के अवस्थाओं का तो अध्ययन किया ही जाता है, साथ ही साथ गर्भकाल से लेकर जीवन पर्यन्त तक के सभी विकास की अवस्थाओं, उसमें विकास प्रक्रियाओं आदि पर भी बल दिया जाता है, तथा इसमें यह भी जानने का प्रयास किया जाता है कि विभिन्न अवस्थाओं में कौन-कौन से परिवर्त्तन होते हैं। यह परिवर्तन किन कारणों से क्यों और कैसे होते हैं?

चित्र : 3 - बाल विकास तथा पारिवारिक संबंध

3 गृह व्यवस्था (Home Management) : गृह व्यवस्था के अन्तर्गत घर तथा भूमि का चयन, स्वच्छता, सजावट एवं गृह प्रबन्ध की जानकारी प्राप्त होती है। इसके अध्ययन से गृहिणी घर को सुचारू रूप से चला सकती है। गृह प्रबन्ध के ज्ञान से घर को व्यवस्थित, सुन्दर, आकर्षक, मनोहारी एवं नैसर्गिक बनाया जा सकता है। कम से कम समय में अधिक से अधिक कार्यों का सम्पादन करना, कम से कम पारिवारिक संसाधनों का उपयोग कर परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना इस विषय वस्तु के अन्तर्गत आता है। इस संरचना के अंतर्गत घर में व्यवहार होने वाले साधनों का सही उपयोग, घर की उचित व्यवस्था, देखरेख, निर्णय लेने की प्रक्रिया, लक्ष्य प्राप्ति की प्रक्रिया, बजट बनाने की प्रक्रिया, समय तथा श्रम की व्यवस्था, धन का व्यवस्थापन, उपभोक्ता एवं संरक्षण शिक्षण आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाती है।

चित्र : 4 - गृह व्यवस्था

4. वस्त्र एवं परिधान : वस्त्रों का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त वस्त्र का प्रयोग करता है। वस्त्र एवं तन्तु का ज्ञान वस्त्र विज्ञान द्वारा ही होता है। वस्त्रोद्योग की महत्ता, उन्नति तथा विकासानुरूप वस्त्रोद्योग तथा वस्त्रों की देखभाल व साफ-सफाई, वस्त्र विज्ञान के अन्तर्गत आता है। विभिन्न तन्तुओं के वस्त्रों की कटाई तथा सिलाई, कढ़ाई तथा विभिन्न प्रकार के वस्त्रों की धुलाई, रंगाई एवं छपाई इस क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। इस विषय में वस्त्रों की देखरेख, रखरखाव (सँभाल), आवश्यकतानुसार वस्त्रों की खरीददारी का ज्ञान सम्मिलित है।

चित्र : 5 - वस्त्र एवं परिधान

5 गृह विज्ञान शिक्षा तथा उसका विस्तार (Home Science Education and Its Extension): इसके अन्तर्गत गृह-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की शिक्षा किस प्रकार दी जाय तथा किस प्रकार इन शाखाओं के ज्ञान का विस्तार किया जाय यह बताया जाता है।

चित्र : 6 - शिक्षा - विस्तार

1.2 गृह-विज्ञान की शिक्षा का उद्देश्य (Objectives of Home science)

गृह विज्ञान अथवा गृह से संबंधित विज्ञान से तात्पर्य उस ज्ञान से है जिसका संबंध आपसे, आपके घर से, परिवार के सदस्यों और आपके संसाधन से है। इसका उद्देश्य सभी संसाधनों का कुशलतापूर्वक एवं वैज्ञानिक तरीके से उपयोग करना है जिससे आपके एवं आपके परिवार के सभी सदस्यों को ज्यादा से ज्यादा संतुष्टि प्राप्त हो सके।

गृह-विज्ञान विषय प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को अर्थपूर्ण बनाता है। गृह-विज्ञान की शिक्षा परिवार की सुख एवं समृद्धि बढ़ता है। वह व्यक्ति को दैनिक जीवन में हो रहे अनुभवों का ज्ञान कराता है। गृह-विज्ञान की शिक्षा का परिवार के सुखों के विकास एवं समृद्धि के क्षेत्र में निम्नलिखित महत्व हैं :-

1. व्यक्ति और समाज में सामंजस्य स्थापित करना।
2. परिवार के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना।
3. आधुनिकीकरण एवं सामाजीकरण के कारण परिवार की बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए साधन जुटाना।
4. व्यक्ति में आहार संबंधी अच्छी आदतों का विकास करना।
5. छात्रों में समझ पैदा करना जिससे वे गृह-विज्ञान द्वारा अर्जित किए गए ज्ञान और कुशलता को अपने संपूर्ण वृद्धि, विकास और कुशलता में प्रयुक्त कर सकें।
6. विद्यार्थियों को विकास के मुख्य तथ्यों से अवगत कराना, ताकि वे बच्चों के विकास की जानकारी प्राप्त कर सकें।
7. छात्रों को एक सजग उपभोक्ता बनाना।

8. बदलते हुए समाज, देश तथा विश्व की स्थितियों के अनुरूप पारिवारिक जीवन को अनुकूल बनाना।
9. विद्यार्थियों को इस बात से अवगत कराना कि वस्त्र-विज्ञान का ज्ञान परिधान के सही चयन तथा संरक्षण के लिए कितना आवश्यक है।

1.3 गृह विज्ञान में रोजगार को सम्भावनाएँ

आधुनिक युग में गृह विज्ञान शिक्षा के रोजगार के क्षेत्र में प्रभावी बनाने हेतु इसमें व्यवसायिक विषयों का समावेश किया गया है जिससे ज्यादा से ज्यादा रोजगार के अवसर मिल सकें।

गृह विज्ञान शिक्षा की रोजगारोन्मुख बनाना

रोजगार का अर्थ उस क्रिया से है जिसके उपरांत पारिश्रमिक के रूप में धन की प्राप्ति होती है। रोजगार मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं -

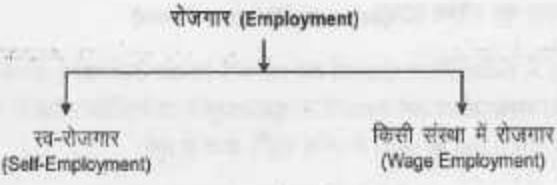

स्व रोजगार (Self Employment) : रोजगार वह आर्थिक क्रिया है जिसे स्वयं किया जाता है। इसके अन्तर्गत धनोपार्जन के लिए सामानों का उत्पादन एवं विक्री के सामानों की खरीद विक्री एवं सेवा प्रदान किया जाता है। दूसरे शब्दों में खुद से सृजित रोजगार द्वारा धन की प्राप्ति करना है।

किसी संस्था में रोजगार (Wage Employment) : इसके अन्तर्गत व्यक्ति निर्धारित उम्र के अनुसार दूसरों के लिए कार्य करता है जिसके प्रतिफलस्वरूप पारिश्रमिक प्राप्त करता है। यह पारिश्रमिक वेतन **(Salary)** अथवा मजदूरी **(Wage)** आदि के रूप में हो सकता है। इसका भुगतान सेवा की शर्तों के अनुरूप मासिक, साप्ताहिक अथवा दैनिक हो सकता है। रोजगार स्थायी **(Permanent)**, गैर स्थायी **(Temporary)** अथवा आकस्मिक **(Casual)** हो सकता है। नियोक्ता सरकार, निजी संस्था अथवा निजी व्यक्ति भी हो सकता है।

स्वरोजगार एवं किसी संस्था में रोजगार में विभिन्नता/अंतर

स्वरोजगार (Self Employment)	किसी संस्था में रोजगार (Wage Employment)
1. व्यक्ति की हैसियत मालिक अथवा नियोक्ता की होती है।	1. व्यक्ति की हैसियत कर्मचारी की होती है।
2. व्यक्ति स्वयं के लिए कार्य करता है	2. व्यक्ति दूसरे के लिए कार्य करता है
3. आय लाभ के रूप में होता है	3. आय वेतन (Salary) अथवा मजदूरी (Wage) के रूप में होती है।
4. आय असीमित हो सकता है जो प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता एवं योगदान पर निर्भर करता है।	4. आय सीमित पहले से तय एवं नियमित होता है।
5. कार्य में लचीलापन होता है और व्यक्ति जो करना चाहे उसपर निर्भर करता है।	5. कार्य का स्वभाव ज्यादातर एक जैसा होता है।
6. व्यक्ति स्वयं निरीक्षक एवं नियंत्रक होता है।	6. निरीक्षक एवं नियंत्रक पूरी तरह से नियोक्ता के हाथ में होता है।

गृह विज्ञान विषय के पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार की गई है कि इसके प्रत्येक शाखा में दोनों तरह के रोजगार की असीम संभावनाएँ हैं।

गृह विज्ञान के व्यवसायिक क्षेत्र

रोजगार

	स्वरोजगार	किसी संस्था में रोजगार
पोषण विज्ञान	• खाद्य संरक्षण का व्यवसाय • गृह केटरिंग व्यवसाय करना • पाक कला सिखाना • हॉबी कक्षा चलाना • आहार विशेषज्ञ • कैंटीन, रेस्तरां या ढाबा खोलना • पार्टी नियोजन • कुक, कॉफी (चाय की दुकान) • सेवा कर्मचारी • केंद्र प्रभारी • बेकरी उद्योग	• किसी खाद्य में कैंटीन, रेस्तरां या होटल आदि में बावर्ची (कुक) या निरीक्षक। • अस्पताल या होटल आदि में आहार विशेषज्ञ • स्कूल अथवा कॉलेज में अध्यापक
वस्त्र विज्ञान	• बुटीक खोलना • रेडीमेड वस्त्रों का व्यवसाय • डिजाइनर, फर्निशिंग का व्यवसाय • कढ़ाई का व्यवसाय • सेवा-स्टाफ ट्रेनिंग • प्रिंटिंग का व्यवसाय (स्क्रीन, ब्लॉक आदि) • टाई (बांधनी) और डाइ (रंगाई) व्यवसाय • बाटिक प्रिन्ट व्यवसाय • सिलाई, कटाई की कक्षाएँ चलाना	• पैटर्न मास्टर • रंगरेज • दर्जी • कढ़ाई करने वाला • प्रिंटर • बुनकर • अध्यापक • कर्मचारी • सहायक कार्यकर्त्ता
पारिवारिक संसाधन व्यवस्था	• आंतरिक सज्जा का व्यवसाय • फर्नीचर सज्जा व्यवसाय • पुष्प व्यवस्था, रंगोली, मेंहदी आदि की कक्षाओं का संचालन • हॉबी कक्षाएँ चलाना • उत्पादन केन्द्र का कर्मचारी	• व्यवसायिक केंद्रो (बैंक, ऑफिस, दुकान, होटल आदि) में आंतरिक सज्जाकार • शिल्पकार • हाउस कीपर • अध्यापक • सरकारी उत्पादन केन्द्र का कर्मचारी

मानव विकास

- क्रेच
- बालबाड़ी
- समाज कल्याण कार्यक्रम
- किंडर गार्डन स्कूल खोलना
- बच्चों का मार्गदर्शन तथा परामर्श
- सॉफ्ट-टॉय बनाने का व्यवसाय
- विभिन्न तरह के खिलौने बनाने का व्यवसाय

- क्रेच में सहायक
- स्कूलों के परामर्शदाता
- किंडर गार्डन में अध्यापक
- प्रशिक्षक
- अनुसंधानक (Researcher)
- कर्मचारी

प्रसार-शिक्षा

- परामर्शदाता
- विकासात्मक संस्था की स्थापना
- मार्केट रिसर्च एजेंसी
- मीडिया प्रोडक्सन और मैनेजमेन्ट

- प्रशिक्षक एवं प्रसारकर्ता
- सामाजिक उद्यमिता
- अनुसंधानक
- परामर्शदाता
- विकास संस्थान में कर्मचारी

अभ्यास

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें -

1. गृह विज्ञान शिक्षा को रोजगार के क्षेत्र में प्रभावी बनाने हेतु इसमें ..... विषयों का समावेश किया गया है।
2. स्वयं सृजित रोजगार द्वारा धन की प्राप्ति ..... कहलाता है।
3. गृह विज्ञान की कुल ..... शाखायें हैं।
4. गृह विज्ञान विषय शुरुआती दौर में ..... के नाम से जाना जाता था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गृह विज्ञान के उद्देश्यों को बतायें।
2. बाल विकास तथा पारिवारिक संबंध को स्पष्ट करें।
3. स्वरोजगार के अर्थ स्पष्ट करें।
4. पोषण विज्ञान में स्वरोजगार के अवसरों को स्पष्ट करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. गृह विज्ञान की संरचना को स्पष्ट करें।
2. गृह विज्ञान के सभी शाखाओं का वर्णन करें।
3. गृह विज्ञान में रोजगार की संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा करें।
4. गृह विज्ञान के उद्देश्यों को स्पष्ट करें तथा उद्देश्यों का विस्तृत वर्णन करें।

वस्तुनिष्ट प्रश्नों के उत्तर

1. व्यवसायिक, 2. स्व रोजगार, 3. पाँच, 4. डोमेस्टिक साइंस

*****